

Christmas Puja

Date	:	25th December 2003
Place	:	Ganapatipule
Type	:	Puja
Speech Language	:	English, Hindi & Marathi

CONTENTS

I Transcript

English	02 - 02
Hindi	03 - 03
Marathi	06 - 06

II Translation

English	-
Hindi	04 - 05
Marathi	07 - 08

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

Today is a great day because we are celebrating, the birth of Jesus Christ. He was such a great Spiritual Personality, who had to suffer, on the cross. This is what many people don't understand - that why a man of His caliber, of His standing, of His Spirituality, should have to go through so many ordeals in life. It is very easy to understand, that He was born in the circumstances, which were against Him, which were against Divine force. So to overcome that people tried to destroy Jesus Christ. And He did not feel the pain, He didn't feel the absurdity of those people, on the contrary He went through all that ordeal with such courage, and such dignity.

So for us, what is there to see is, that if you are Divine and if you have powers of Divinity, then, you should have courage, and with that courage you can face all kinds of ordeals. On the whole, wherever you are on this Earth, there are problems of different types. You may belong, to Royal families, or you may be a poor person, there are always problems facing you. But, Christ has shown by His life, that though He had to suffer so much, He was so patient and courageous. His life has given us an example - what we should be, how we should behave, when we are facing problems because of ignorance of people.

But today is a happy day because it is His Birth date. And we are all celebrating because He has shown us a new path of Spirituality, in which one has to suffer. Because of the ignorance of many who are there, He suffered so much, but today it's not so bad, people understand Spirituality and Divinity. And you are so many together now. In these sufferings, Christ never cried or wept. He went through it, in a very resolute manner. So what we have to learn from His life is that we should not be afraid. Whatever might be happening to us, we should not be afraid. But times have changed and people don't torture anyone because of your Spirituality. It's not there - it's finished. Christ wiped out all that from human minds and people respect you, for being Spiritual.

This is the message of Christ's life and we all should be very happy that He has shown us this path of endurance. The message of Sahaja Yoga is the same - that you take to your Realization, you take to Spiritual life and everything will work out, because all the Divine forces are with you. They are working out everything for you, and you are so many who can say that you have witnessed it. So this kind of life that Christ had, you don't have to go through; He has done for us. Your life will be very, very safe, and peaceful and joyous. That is without My telling you, you must have experienced. These days also there are very cruel people, very absurd, and extremely aggressive, but still no one can harm you. Life has become very different. And we thank Christ that He has gone through all that, to save us, from those ordeals.

ORIGINAL TRANSCRIPT

HIINDI TALK

ईसामसीह की आज जन्मतारीख है और हम लोग बहुत खुशी से मना रहे हैं।

किंतु जीझस क्राइस्ट को कितनी तकलीफें हुई वो भी हम लोग जानते हैं और जो तकलीफें, परेशानियाँ उनको हुई वो हम लोगों को नहीं हो सकती क्योंकि अब समाज बदल गया है, दुनिया बदल गयी है और इस बदली हुई दुनिया में आध्यात्मिक जीवन बहुत महत्वपूर्ण है। इससे कितने क्लेश हमारे दूर हो सकते हैं। हमारे शारीरिक क्लेश अध्यात्म से खत्म हो सकते हैं। मानसिक क्लेश अध्यात्म से खत्म हो सकते हैं। इसके अलावा जागतिक जो क्लेश हैं वो भी खत्म हो सकते हैं। इस तरह सारी दुनिया की जिंदगी जो है अध्यात्म में पनप सकती है। कितना महत्वपूर्ण है ये जानना की एक तरफ तो ईसामसीह जैसा अध्यात्म का.... और दूसरी तरफ हम लोग जिन्होंने अध्यात्म को थोड़ा बहुत पाया है और हम लोगों की वजह से दुनिया शांत हो गयी। बहुत सी तकलीफें दूर हो गयी है और मनुष्य जान गया कि उसके लिये सबसे बड़ी चीज़ है अध्यात्म को पाना। ये आप लोगों की जिंदगी से उसने जाना है। आपको देख कर उसने जाना है। ये सारा परिवर्तन आप लोगों की वजह से आया। हम अकेले क्या कर सकते थे? जैसे ईसामसीह वैसे हम। हम कितना कर सकते थे। लेकिन इतने आप लोगों ने जब अध्यात्म को प्राप्त कर लिया है, तब देख सकते हैं कि दुनिया कितनी बदल गयी है। आपके प्रभाव से और आपके इस अंतर्दामी जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक जितनी भी तकलीफें हैं वो दूर हो गयी हैं। इसका प्रत्यंतर बहुत लोगों को आया है। दुनिया भर में लोग जान गये हैं कि सहजयोग से बहुत जबरदस्त परिवर्तन आ जाता है।

सिर्फ एक व्यक्तिगत नहीं किंतु जागतिक हजारों लोगों में परिवर्तन आ सकता है। समाज में परिवर्तन आ सकता है और ये सब आप कर रहे हैं, जो बड़ी महत्वपूर्ण बात है।

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari



आज महान दिवस है, हम ईसामसीह का जन्मदिवस समारोह मना रहे हैं। उनका व्यक्तित्व इतना आध्यात्मिक था कि उन्हें सूली पर चढ़ना पड़ा। बहुत से लोगों की समझ में ये बात नहीं आती कि उन जैसी योग्यता, स्थिति तथा आध्यात्मिकता वाले व्यक्ति को जीवन में इतने कष्ट क्यों झेलने पड़े। ये बात समझ लेना बहुत आसान है कि उनका जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ जो उनकी स्थिति तथा परमेश्वरी शक्ति के प्रतिकूल थीं। ईसामसीह को वश में करने के लिए लोगों ने उन्हें खत्म करने का प्रयत्न किया। परन्तु न तो वे दर्द से तड़पे और न ही लोगों की मूर्खता का बुरा माना। इसके विपरीत, उन्होंने सारे कष्ट झेले। यह उनकी दिव्यता थी क्योंकि दिव्य शक्ति साहस प्रदान करती है और साहस से व्यक्ति अग्नि परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है। पृथ्वी पर अवतरित व्यक्ति के सम्मुख भिन्न प्रकार की समस्याएं होती हैं, चाहे आप राजवंशी हों या निर्धन व्यक्ति। समस्याएं सदैव बनी रहती हैं। ईसामसीह ने दर्शाया

कि इतने कष्ट झेलते हुए भी वे अत्यन्त शान्त थे। उनका जीवन हमारे सम्मुख एक मिसाल है कि लोगों द्वारा खड़ी की गई समस्याओं का सामना करते हुए हमें कैसा होना चाहिए और किस प्रकार आचरण करना चाहिए।

आज उनका जन्म दिवस है, यह खुशी का दिन है। हम समारोह मना रहे हैं क्योंकि उन्होंने आध्यात्मिकता का नया मार्ग हमें दिखाया है जिसमें कष्ट झेलने ही पड़ते हैं। बहुत से लोगों की अज्ञानता के कारण उन्होंने इतना दुःख उठाया। परन्तु आज स्थिति इतनी बुरी नहीं है। लोग आध्यात्मिकता और दिव्यता को समझते हैं तथा आज आपकी संख्या भी काफी बड़ी है। कष्टों को झेलते हुए भी ईसा कभी न तो रोए और न चिल्लाए। अत्यन्त दृढ़ता पूर्वक उन्होंने सब कुछ सहन किया। अतः उनके जीवन से हमें सीखना है कि किसी भी परिस्थिति में हमें घबराना नहीं। अब समय बदल गया है। आपकी आध्यात्मिकता के कारण लोग अब आपको सताते नहीं। ऐसा नहीं है। यह सब

समाप्त हो गया है। ईसा मसीह ने मानव मस्तिष्क से ये सब भाव समाप्त कर दिए हैं। आध्यात्मिक होने के कारण लोग अब आपका सम्मान करते हैं। ईसा मसीह के जीवन का यही संदेश है। हमें खुशी होनी चाहिए कि उन्होंने हमें सहनशीलता का मार्ग दिखाया।

सहजयोग का भी यही संदेश है कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें, आध्यात्मिक जीवन अपनाएं। बाकी सब कुछ स्वतः ठीक हो जाएगा क्योंकि सभी दिव्य शक्तियाँ आपके साथ हैं। वे आपके लिए सभी कार्य कर रही हैं। आपमें से अधिकतर लोग इस बात के साक्षी हैं। जीवन में

उन्होंने जो कष्ट सहे वो आपको नहीं सहने पड़ेंगे। हमारे लिए उन्होंने सभी कष्ट सह लिए। हमें प्रसन्न, शांत एवं आनन्दित होना है। मुझे ये सब कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप लोगों ने इसका अनुभव किया है। आज भी अत्यन्त क्रूर, मूर्ख एवं आक्रामक लोग हैं, परन्तु कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। जीवन अत्यन्त बदल गया है और जिस लक्ष्य के लिए ईसामसीह ने इतनी यातनाएं झेलीं उसे प्राप्त करने में आपको काफी मदद मिली है।

ORIGINAL TRANSCRIPT

MARATHI TALK

मी मराठीत बोलायचं म्हटलं तर एवढच सांगायचं की ख्रिस्तांचा आयुष्य अत्यंत दुःखमय होतं, पण ते त्यांनी हसून निभावलं. कारण तो पवित्र आत्मा होता.

अशा माणसाला कोणतही दुःख होत नाही. पण त्याच्यामुळेच आपण सर्वांनी प्राप्त केलं आहे आध्यात्मिक जीवन. त्यामुळे इतर लोकांनासुद्धा पुष्कळ फायदा होऊ शकतो. कारण ते आपलं आयुष्य बघतात आणि त्यांना आश्चर्य वाटतं की हे मानव असून इतके खुश, आनंदी असे कसे? पण जेव्हा त्यांना कळतं हे सहजयोगामुळे घडलं तेव्हा ते ही सहजयोगात येतात. ही कमालीची गोष्ट आहे. ते वरदान तुम्हाला मिळालेले आहे. फक्त ते जपून ठेवलं पाहिजे. त्याच्यावर मेहनत केली पाहिजे आणि सगळ्यात मुख्य म्हणजे दुसऱ्यांना दिलं पाहिजे. एकट तुम्ही अनुभवून होत नाही. हा अमृताचा पेला तुमच्या तोंडात आहे तो दुसऱ्यांच्याही जाऊ देत. दुसऱ्यांनाही बरं वाटू देत. त्यांची भलं होऊ देत. म्हणून सर्व सहजयोग्यांनी प्रयत्न केला पाहिजे की आम्ही दुसऱ्यांनाही सहजयोगात उतरवू. सगळ्या जगात सहजयोग पसरला आहे. तो फार थोडा आहे. आणखीन पसरायला पाहिजे. ख्रिस्तांचे फक्त बारा शिष्य होते आणि त्यांनी ख्रिश्चानिटी वाढवली. पण केवढ्या चूका झाल्या त्यांच्या. पुष्कळच चुका झाल्या. जेव्हा तुम्ही सहजयोग पसरवता तेव्हा त्या चुका करू नका. सरळ, धोपटमार्गाने ते काही कठीण नाही. त्याच्यामध्ये परमेश्वराने तुम्हाला शक्ती दिलेली आहे, बुद्धी दिली आहे ती वापरा. मला पूर्ण विश्वास आहे की तुमच्या हातून किती तरी सहजयोगी होऊ शकतात आणि तुम्ही तसा प्रयत्न करावा. रात्रंदिवस हाच विचार करावा, की आम्ही कोणाला पार करू? कोणाला आम्ही याच वरदान देऊ? ही फार मोठी जबाबदारी तुमच्यावर आहे.

जस तुम्हाला सहजयोग मिळाला तशीच ही जबाबदारी तुमच्यावर आलेली आहे. तेव्हा मनामध्ये हाच निश्चय करायचा की आम्ही दुसऱ्यांनाही सहजयोग देऊ. स्वतः पुरते ठेवणार नाही.

अनंत आशीर्वाद आहे तुम्हाला!

MARATHI TRANSLATION

(English & Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari



ख्रिस्तमस पूजा

प. पू. श्रीमालाजी निर्मलादेवींचे
भाषण, गणपतीपुळे,
डिसेंबर २००३

तुम्हाला मिळालेले

अमृत इतरांना

वाटा सहजयोग

पसरवणें हीच तुमची

जबाबदारी आहे

हे विसरू नका.

येशू ख्रिस्त हे एक महान व दैवी संतपुरुष होते; पण तरीही त्यांना शेवटी सुळावर दिले गेले. बरेच लोकांना वाटते की एवढ्या महान अवतारी सिध्दपुरुषालाही ह्या कठीण यातना का भोगाव्या लागल्या? पण लक्षांत घ्यायची साधी गोष्ट म्हणजे ज्या काळी ते जन्माला आले त्या काळांत सर्व वातावरणच त्यांच्या आणि परमेश्वरी शक्तीच्या विरोधांत होते आणि त्यामुळेच त्या लोकांनी त्यांचा अतोनात छळ केला. पण तरीही त्यांना त्या यातनांचे दुःख झाले नाही वा लोकांच्या मूर्खपणाचा राग आला नाही. उलट त्या सर्व यातना व संकटांना त्यांनी धीरोदात्तपणे व आत्मसन्मानपूर्वक तोंड दिले. यातून ख्रिस्त आपल्याला हाच संदेश देतात कीं तुम्ही परमात्म्याला जाणले असेल आणि ती परमशक्ति तुमच्यामधें जागृत असेल तर तुम्ही निर्भय बनून कसल्याही संकटांचा मुकाबला करू शकता. जगाच्या पाठीवर जन्माला येणाऱ्या प्रत्येक माणसाला अनेक अडचणी व प्रश्न येणारच; तुमचा जन्म एखाद्या गरीबाच्या घरांत येतो वा श्रीमंताच्या महालात येवो, भौतिक समस्या तुमचा पाठलाग करणारच. ख्रिस्तांनी त्यांच्या जीवनांतून हेच दाखवून दिले की अत्यंत वलेशकारक व यातनामय प्रसंगातही त्यांनी संयम व धैर्य

बाळगले. त्यांच्या जीवनाकडे पाहिल्यावर हेच दिसून येते की मूर्ख व अज्ञानी लोकांमुळे सज्जनांनाही कसा व किती त्रास भोगावा लागतो.

आज आपण ख्रिस्तांचा जन्मदिवस मोठ्या आनंदाने साजरा करत आहोत; कारण त्यांनी आत्मोन्नतीचा हा नवीन मार्ग दाखवला ज्यामधें लोकांच्या अज्ञानामुळे आपल्यावर येणाऱ्या संकटांना, त्रास झाला तरी, तोंड दिले पाहिजे. ख्रिस्तांना प्रचंड यातना सहन कराव्या लागल्या, त्यामानानें आता परिस्थिति तशी बरी आहे आणि साधारणपणें लोकांना अध्यात्माची थोडी-फार जाण आली आहे. शिवाय तुम्हा सहजयोग्यांची संख्या आता खूप आहे. एवढ्या मोठ्या मरणप्राय यातना सहन करतानाही ख्रिस्त कधी रडले नाहीत वा अश्रू गाळत बसले नाहीत हे लक्षांत घ्या. म्हणून तुम्ही पण निर्भय बनून कसल्याही संकटांना वा परिस्थितीला सामोरे जायला शिका.

आता दिवस खूप बदलले आहेत, ख्रिस्तासारखा तुमचा आता छळ होणार नाही. तुम्ही आत्म्याला जाणले असल्यामुळे माणसाच्या मनांतील चुकीच्या समजुती तुम्ही जाणू शकता; ख्रिस्तांनी आधीच त्या संपवून टाकल्या आहेत. आता लोक अध्यात्मिकतेकडे वळत आहेत; अध्यात्माबद्दल त्यांना आदर आहे.



ख्रिस्तांनी आपल्याला सहनशीलतेचा मार्ग मोकळा करून दिला हे आपले भाग्यच आहे.

सहजयोगाचाही हाच संदेश आहे. साक्षात्कार मिळाल्यावर एकदां तुम्ही आत्म्याशी जोडले गेलात की सर्व कांही घडून येणार आहे. कारण परमेश्वरी शक्ति तुमच्यामधून कार्य करुं लागते व ती सदैव तुमच्या पाठीशी असते. तुमच्यापैकी अनेकांना याचा प्रत्यक्ष अनुभव आहे. ख्रिस्तांसारखे त्रास आता तुम्हाला भोगावे लागणार नाहीत; तुम्ही पूर्णपणे सुरक्षित आहांत आणि तुम्हाला शांत व आनंदी जीवन मिळत आहे. आजूबाजूला कितीही मूर्ख, दुष्ट व आक्रमक लोक असले तरी त्यांच्यापासून तुम्हाला कांहीही धोका नाही. आपल्यासाठी ख्रिस्तांनी ते सर्व त्रास व यातना स्वतः भोगून संपवल्या आहेत. म्हणूनच आपण त्यांचे सदैव ऋणी राहिले पाहिजे व आपला मार्ग मोकळा केला म्हणून त्यांचे आभार मानले पाहिजेत.

हाच संदेश हिंदीमधून देताना श्रीमाताजी पुढे म्हणाल्या :

आज एकंदर समाज - जीवन बदलत आहे व अध्यात्मिक जीवनाचे महत्त्व लोकांना कळू लागले आहे. अध्यात्मिक श्रद्धेमुळे आपले शारीरिक, मानसिक व व्यावहारिक इ. त्रास कमी होतात हेही लोकांच्या लक्षात येऊ लागले आहे. लोकांचा कल हळु हळु का होईना अध्यात्मिकतेकडे वळत आहे हे जाणणे महत्त्वाचे आहे. सहजयोगात येऊन तुम्हाला शांति-समाधान-आनंद मिळाल्याचे पाहून, तुमच्यामधील हे परिवर्तन पाहून, लोक अधिकाधिक प्रभावित होत आहेत. मी एकटी एवढे कार्य करुं शकले नसते. तुमच्यामुळेच हे कार्य होत आहे आणि त्यांतूनच सर्व मानवजातीमध्ये हे परिवर्तन होणार आहे.

पुढे मराठी मधून बोलतांना श्रीमाताजी म्हणाल्या :-

ख्रिस्तांना किती यातना भोगाव्या लागल्या हे तुम्हा सर्वांना माहित आहेच; पण ते सर्व त्रास व दुःख त्यांनी पचवले; कारण ते पवित्र आत्माच होते. हा त्यांच्या जीवनाचा अर्थ तुम्ही नीट समजून घेतला पाहिजे. त्यांच्यामुळेच आत्मसाक्षात्काराचा मार्ग मोकळा झाला. आत्मसाक्षात्कार हे तुम्हाला मिळालेले वरदान आहे; म्हणून जपून रहा व त्याच्यावर मेहनत करा. सगळ्यांत महत्त्वाचे म्हणजे दुसऱ्यांनाही आत्मसाक्षात्कार (रियलायझेशन) द्या; तुम्हाला मिळालेले हे अमृत इतरांना वाटा; आणि सहजयोग सर्वत्र पसरवा. ख्रिस्तांना फक्त बारा शिष्य मिळाले; त्यांनी खूप कार्य केले तसेच ते करताना त्यांनी खूप चुकाही केल्या. तुम्ही मात्र चुका करुं नका, धोपट मार्गाने सहजयोगाचा प्रसार करा. तुमच्यावर ही मोठी जबाबदारी आहे म्हणून रात्रंदिवस मेहनत करण्याचा ठाम निश्चय करून दुसऱ्यांना सहजयोग देत रहा. सहजयोग घेतलात त्याबरोबरच ही जबाबदारी पण तुम्ही पत्करली पाहिजे.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

